Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य की शिक्षण-प्रणाली में कृतिम मेधा

प्रा. विशाल किशन राठोड*
सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग
श्री दत्त कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, हदगाव
ता. हदगाव जि.नांदेड

शोध सार

प्रस्तुत शोध-पत्र कृत्रिम मेधा (AI) के संदर्भ में हिंदी साहित्य के बदलते स्वरूप, उसकी संभावनाओं तथा चुनौतियों का विवेचन करता है। तकनीकी विकास ने साहित्य की रचना-प्रक्रिया, विषयवस्तु, भाषा, अनुवाद तथा प्रसार के माध्यमों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। कृत्रिम मेधा द्वारा सृजित पाठ, रचनात्मकता की अवधारणा को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता उत्पन्न करता है और यह प्रश्न खड़ा करता है कि साहित्य में मानवीय संवेदना, चेतना एवं अनुभव की भूमिका क्या बनी रहेगी। यह शोध हिंदी साहित्य में कृत्रिम मेधा से उत्पन्न नए कथ्य रेखांकित करता है। जैसे मानव एवं मशीन संबंध, नैतिकता, पहचान और तकनीक-आधारित समाज का विश्लेषण करता है। साथ ही, ए.आई. आधारित अनुवाद और डिजिटल मंचों के माध्यम से हिंदी साहित्य की वैश्विक पहुँच की संभावनाओं पर भी प्रकाश डालता है। शोध-पत्र का निष्कर्ष यह प्रतिपादित करता है कि कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य के लिए प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि एक सहायक उपकरण है, जिसका संतुलित और नैतिक उपयोग साहित्य को अधिक समृद्ध, समकालीन और व्यापक बना सकता है।

बीज शब्द: *कृत्रिम बुध्दिमता, हिंदी साहित्य, डिजिटल, ज्ञान, प्रोसेसिंग, स्व-शिक्षण*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रा. विशाल किशन राठोड
Email: vishalrathod76545@gmail.com

प्रस्तावना

हिंदी भाषा भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्यिक चेतना की वाहक रही है। समय के सथ भाषा के अध्ययन की पद्धतियॉं भी परिवर्तित होती रही है। परंपरागत अध्ययन-पद्धतियों के साथ-साथ अब डिजिटल और तकनीकी माध्यमों ने हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन को नया आयाम दिया है।

हिंदी भाषा, साहित्य की भाषा होने के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में समक्ष भाषा हैं। कृत्रिम मेधा ज्ञान की एक नई विधा है और भारत इसमें बहुत प्रगति कर चुका है और कर रहा है। इस प्रगति में हिंदी साथ चल रही है। हिंदी में कृतिम बुध्दिमत्ता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य घटित हो रहे हैं।

आधुनिक प्रौधोगिकी युग में आर्टिफिशल इंटेलिजेस (ए.आय.) का प्रयोग साहित्य समाज तथा संस्कृति की सबसे रोमांचक प्रगति में से एक है। कृतिम बुध्दिमता के रूप में जाने वाले कंम्प्यूटर के लिए समाज में रहने वाले लोगों तरह व्यवहार करना संभाव है। नई प्रौधोगिकियों में चल रहे विकास के आलोक में, साहित्य समाज तथा संस्कृति के अध्ययन का भविष्य और भी दिलचस्प हो गया है। आज, डेटा पूलिंग और कृतिम बुध्दिमता, साहित्य की दुनिया में ई-पुस्तके, वीडियों, पॉडकास्ट, सिमुलेशन इंटरनेट संसाधनों तक पहुच प्रदान कर रही है। सीखने-सिखाने को अधिक इंटरॅक्टिव, अनुकूलित और मजेदार बनाना कृत्रिम बुध्दिमत्ता का ही चमत्कार कहा जा सकता है।

बीज शब्दा : कृत्रिम बुध्दिमता, हिंदी साहित्य, डिजिटल, ज्ञान, प्रोसेसिंग, स्व-शिक्षण

कृत्रिम बुध्दिमता की अवधारणा :

कृत्रिम बुध्दिमता (ए.आय.) कम्प्यूटर विज्ञान का वह क्षेत्र हे जो आमतौर पर मानव बुध्दि से जुड़ी संज्ञानात्मक समस्याओं को हल करने के लिए समर्पित है, ए.आय. का लक्ष्य स्व-शिक्षण प्रणाली बना है जो डाटा में डाटा एकत्र करते हैं। ए.आय. लक्ष्य स्व-शिक्षण प्रणाली बनाना है जो डाटा

से अर्थ प्राप्त करती है। फिर ए.आय. उस ज्ञान को मानव समान तरीकों से नई समस्याओं को हल करने के लिए लागू कर सकता है।

कृत्रित बुध्दिमता वह गतिविधि है जिसके द्वारा मशीनों को बुध्दिमता बनाने का काम किया जाता है और बुध्दिमत्ता वह गुण है जो किसी इकाई को अपने वातावरण में उचित और दुरदर्शिता के साथ कार्य करने में सक्षम बनाता है।

जब कोई मशीन या उपकरण परिस्थितियों के अनुकूल सीखकर समस्याओं को हल करता है तो यह कृत्रिम बुध्दिमत्ता के दायरे में आता है। इसे विचार करने, नियोजन, सीखने, भाषा की प्रोसेगिंग, अवधारणा, गति, रचनात्मकता आदि का मिश्रण कहा जा सकता है।

कृत्रिम मेधा का अर्थ :

ए.आय. एक ऐसी मशीन है जो कम्प्यूटर सिस्टम्स में मानव जैसी सोच, समझ निर्णय लेने की क्षमता और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता रखता है। कृत्रिम मेधा में एल्गोरिद्म और सिस्टम्स बनाये जाते हैं जो मानव की तरह सोचने, सीखने, समस्या हल करने और निर्णय लेने की क्षमता रखते है। यह सिस्टम्स का उद्देश्य मानव बुध्दि की नकल करने के साथ उसकी क्षमता को बढ़ाना होता है।

सरल भाषा में कहा जाए तो कृत्रिम बुध्दिमत्ता उन तकनीको का समूह है जो मशीनों को मनुष्यों की तरह 'सोचने' में सक्षम बनाती है।

हिंदी साहित्य और ए.आय. :

हिंदी भाषा साहित्य की भाषा होने के साथ-साथ, आधुनिक ज्ञान, विज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में सक्षम भाषा है। कृत्रिम मेधा ज्ञान की एक नई विधा है और भारत इसमें बहत प्रगति कर चुका है और कर रहा है। इस प्रगति में हिंदी साथ चल रही है।

ए.आय. साहित्यिक कृतियों की तुलना, विषयगत वर्गीकरण और प्रवृत्तिगत विश्लेषण कर सकता है, जिससे आलोचना को एक वैज्ञानिक आधार प्राप्त होता है। साहित्यिक आलोचना में कृत्रिम बुध्दिमत्ता (ए.आय.) एक नवीन और महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभर रही है। ए.आय. साहित्यिक रचनाओं के छोटे-बड़े पाठ्यसंग्रह को विश्लेषण करके उनकी विषयवस्तु, शैली की जानकारी देता है।

कृतिम बुध्दिमत्ता की मदत से भाषा के क्षेत्र में सबसे बड़ा कार्य ये हो सकता है कि अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों को विकसित किया जा सकता है। हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व-स्तरीय सामग्री की कमी है। कृत्रिम बुध्दिमत्ता की मदद से ऐसी सामग्री हिंदी में तैयार की जा सकती है और मशीन अनुवाद के माध्यम से वैश्विक ज्ञान को हिंदी भाषा में ग्रहण किया जा सकता है। कृत्रिम मेधा की मदद से विद्यालयों-महाविद्यालयों में शिक्षण कार्य को अप्रत्याशित ढंग से बेहतर, विस्तृत और वैश्विक बनाया जा सकता है। हिंदी में शिक्षण सामग्री तैयार करना आसान और तेज हो जायेगा।

कृत्रित मेधा हिंदी के स्थायी भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। एक रिपोर्ट के अनुसार 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंततक विलूप्त हो जाएगी। अगर हम हिंदी भाषा को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नही देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेधा को अपनाना चाहिए। हमारा हिंदी साहित्य, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, वेद, पराण जैसे ग्रंथ आयुर्वेद, योग जैसी आदि यह सब गैर हिंदी पाठकों तक पहुंच सकती है।

साहित्य समाज, संस्कृति और ए.आय. :

कृत्रिम मेधा ए.आय. के कारण साहित्य, समाज तथा संस्कृति के अध्ययन का भविष्य और भी दिलचस्प हो गया है। कृत्रिम मेधा और डेटा पुलिंग, साहित्य की दुनिया में ई-पुस्तके, विडिओं जैसे इंटरनेट संसाधनों तक प्रदान कर रही है। कृत्रिम मेधा ए.आय. ने सीखने सिखाने को अधिक इंटरॅक्टिव, अनुकूलित और मजेदार बना दिया है।

आनेवाले समय में कृत्रिम बुध्दिमत्ता के विकास से न केवल हिंदी में बल्कि भारतीय भाषा साहित्य में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन संभव होंगे। डिजिटल तकनीक की मदद से, शैक्षणिक संस्थान अधिक छात्रों को पारंपारिक रूप से व्यक्तिगत निर्देश की तुलना में पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला और सहायता प्रदान कर रहे है।

कृत्रित मेधा ए.आय. द्वारा साहित्य, समाज तथा संस्कृति के अध्ययन को अधिक प्रभावी और उन्मुख बनाया जाता है। कृत्रिम मेधा उद्देश्य युवाओं की निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करने में मदद करना है। अब यह न केवल सहायक बन गया है, बल्कि निर्माता भी बन गया है और "कृत्रिम साहित्य" (ए.आय. साहित्य) के नाम से जाने जानी वाली है। इसे साहित्य सामग्री बनाना अब आसान और तेज हो जाएगा। साहित्य सामग्री बनाने के लिए ए.आय. का उपयोग किया जा रहा है।

कृत्रिम मेधा, हमारे कार्यों, हमारे काम डेटा भंडार, नय और पुराने दोनों, इनपुट, अपनी गलती और अन्य चीजों से सीखने और बेहतर बनाने में

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सक्षम है। कृत्रिम मेधा भाषाओं के बीच गहरा संबंध बनाने के लिए मुख्य प्रभावों में से एक होगा।

साहित्य को व्यापक अर्थ में लिया जाए तो रूढ़ साहित्य, कथा कहानी, नाटक इत्यादी भी समाहित की जा सकता है। जो साहित्य संग्रहीत था वह इंटरनेट के जरिए बाहर आ रहा है, जहॉं एक साथ कई लोग उपयोग कर रहे है।

ए.आय. लेखन सहायक की भूमिका निभा रहा है। वह लेखक को संशोधन, लेखन, विकल्प शब्द साथ कई विकल्प भी प्रस्तुत कर देता है। ए.आय. यह एक प्रकार से जादु जैसे हो गया है। जो मॉंगों मिलेगा लेकिन उसकी कुछ सीमाएँ भी है, किसी भी विषय पर तुरंत रचनात्मक साहित्य उपलब्ध हो सकता है।

ए.आय. हमारे भविष्य पर कैसा प्रभाव डाल सकता है इस विषय पर अनेक फिल्में भी है जैसे की- रा-वन, तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया, रोबोट जैसी हिंदी फिल्में आई है। जिसमें मानव और ए.आय. के भविष्य का चित्रण है।

संदर्भ सूची :

1. तिवारी, भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद
2. भारतीय भाशा संस्थान, डिजिटल युग में भारतीय भाषाएँ, मैसूर
3. साहित्य कौशल तथा व्यावहारिक हिंदी- डॉ प्रो संतोष विजय कमार येरावार
4. अथ- साहित्य पाठ और प्रसंग, राजीव रंजन गिरी, अनुज्ञा बुक्स दिल्ली
5. हिंदी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल